विशद
श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
(भक्तामर अर्चना)

बीच में - ॐ
प्रथम कोष्ठ - 8
द्वितीय कोष्ठ - 16
तृतीय कोष्ठ - 24
कुल - 48 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

ye lagega

कृति - विशद श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

रचयिता - प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

संस्करण - प्रथम-2021, प्रतियाँ - 1000

सम्पादन . मुनि 108 श्री विशाल सागर जी महाराज

सहयोग - आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लक श्री विसौम सागर जी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती माताजी

संकलन - ज्योति दीदी-9829076085, आस्था दीदी
सपना दीदी-9829127533, आरती दीदी-8700876822

कम्पोजिंग - आरती दीदी-8700876822

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जैन सेठी, शांति नगर, जयपुर - 9413336017
2. हरीश जैन, दिल्ली - 9136248971
3. महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी - 09810570747
4. पदम जैन, रेवाड़ी - 09416888879
5. श्री सरस्वती पेपर स्टोर, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8561023344, 8114417253

पुण्यार्जक :
श्री अजय कुमार-श्रीमती पुनीता जैन, अमित-पूजा जैन, अनय जैन
ई-ब्लॉक, प्रीत विहार, दिल्ली, मो.: 9311022502

मुद्रक - बसन्त जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टिंग इण्डस्ट्रीज, SBI के नीचे, चांदी की टकसाल, जयपुर - मो.: 8114417253, 8561023344
ईमेल : jainbasant02@gmail.com

मूल्य - 30/- रु. मात्र

500 Book me
ye lagega

कृति – विशद श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

रचयिता – प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

संस्करण – प्रथम-2021, प्रतियाँ - 1000

सम्पादन . मुनि 108 श्री विशाल सागर जी महाराज

सहयोग – आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लक श्री विसौम सागर जी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती माताजी

संकलन – ज्योति दीदी-9829076085, आस्था दीदी
सपना दीदी-9829127533, आरती दीदी-8700876822

कम्पोजिंग – आरती दीदी-8700876822

प्राप्ति स्थल – 1. सुरेश जैन सेठी, शांति नगर, जयपुर - 9413336017
2. हरीश जैन, दिल्ली - 9136248971
3. महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी - 09810570747
4. पदम जैन, रेवाड़ी - 09416888879
5. श्री सरस्वती पेपर स्टोर, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8114417253

पुण्यार्जक :
सी.ए. शैलेन्द्र कुमार जैन-श्रीमति नीरा जैन, डॉ. अरिहन्त जैन, इंजि. अजित जैन
बिजनौर (उत्तर प्रदेश)-246701

मुद्रक – बसन्त जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टिंग इण्डस्ट्रीज, SBI के नीचे
चांदी की टकसाल, जयपुर - मो.: 8114417253
ईमेल : jainbasant02@gmail.com

मूल्य – 30/- रु. मात्र

गुरु की छांव तले

परम पूज्य गुरुदेव 108 आचार्य श्री विशद सागर जी महामुनिराज में यथा नाम तथा गुण की सूक्ति चरितार्थ है। वे लेखन, चिंतन, सृजन और निर्भयता से हृदय स्पर्शी कथन करने वाले गुरुदेव हैं इनकी लेखनी में देवी सरस्वती माँ का भण्डार समाहित है जब किसी विधान का प्रारंभ होता है अन्त का तो पता ही नहीं चलता कब पूर्ण हो गया शब्दों की माला ऐसे बनती है नये से नये शब्द जिनका अर्थ सरलता से ही समझ जाते हैं प्रवचन में अथवा कोई क्लाश पढ़ाने का तरीका समझाने का तरीका कुछ अलग है सामने वाले के दिमाग में फिट करके ही छोड़ते हैं। ऐसे वात्सल्यमयी गुरुदेव दीर्घायु हों स्वस्थ रहें लेखनी निरन्तर चलती रहे गुरुदेव ने ''श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान'' एवं दीपार्चना की रचना की है जो आपके सामने प्रस्तुत है आप सभी प्रभु की आराधना करें भक्ती करें एवं पुण्य की शक्ति को बढ़ाएँ जीवन को सुन्दर तरीके से जिएं परिवार में सुख शांति धर्म से ही आती है बच्चों में भी धर्म के संस्कार बढ़ते हैं मार्ग अच्छा हो तो साथ भी अच्छा मिलता है।

ज्ञान सरोवर आप हैं, करते ज्ञान प्रदान।
पंचाचारी हो करें, इस जग का कल्याण।।

गुरुदेव ने जीवन में जो ज्ञान धन पाया है वह सारे जग को समर्पित कर रहे हैं। जिस प्रकार धन प्राप्त करने वाले दो प्रकार के हैं एक तो कंजूस जो धन जोड़कर रखते हैं, दूसरे दानी जो धन को स्व परोपकार में लगाते हैं उसी प्रकार गुरुदेव भी ज्ञान धन को जितना लुटाते हैं उतना भण्डार भरता जा रहा है कहा भी है –

सरस्वती के भण्डार की बड़ी अपूरव बात।
ज्यों खर्चे त्यों त्यों बढ़े बिन खर्चे घट जात।।

और भी कहा है –

तुंगात्फलं यत्तदकिंनाच्च, प्राप्यं समृद्धान्न धनेश्वरादेः।
निरम्भसोऽप्युच्चतमादिवाद्रेर्, नैकापि निर्याति धुनी-पयोधेः।।

अर्थात् – लोभी धनवान से जो फल कभी प्राप्त नहीं होता है, किन्तु आकिन्चन दानी से वह फल पल भर में ही प्राप्त हो जाता है।

इस पुस्तक में श्री मुनिसुव्रत विधान दीपार्चना एवं संस्कृत विधान का समायोजन है। सम्पूर्ण क्रिया विधि से अनुष्ठान कर पुण्यार्जन करें।

ब्र. – सपना दीदी

लघु विनय पाठ

(दोहा छन्द)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो !, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो !, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं नि.स्व.।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

''पूजा प्रतिज्ञा पाठ''

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी !, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।

निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान !
हे अर्हन्त ! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

''स्वस्ति मंगल पाठ''

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

''परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ''

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौ भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमान विंशति जिन, अनन्तानन्त सिद्ध, निर्वाण क्षेत्र समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पंचकल्याण नमस्ते।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।

दोहा - अर्हंतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)।।

श्री मुनिसुव्रत स्तवन

।। वीर छन्द।।

परम पूज्य तीर्थंकर जिनवर, मुनिसुव्रत प्रभु दया निधान।
राजगृही के स्वामी अनुपम, श्री जिनेश्वर परम प्रधान।।
परमातम अरहंत परम प्रभु, प्रशम प्रशान्त प्रभूतातम।
प्रशान्तादि प्रिय मित्र सुसंवर, जिन परमेश प्रमेयातम।।1।।
परम तत्त्व संपदा परम पथ, परम निष्ठ परमोत्तम प्राण।
परम शुक्ल ध्यानी परमेष्ठी, पाप प्रहारक परम पुमान।।
पूर्ण परिग्रह त्यागी प्रत्यय, प्रभव प्रणेता प्रभामयी।
प्रभादित्य प्रशमेश प्रकृति प्रिय, राग द्वेष मोहादि जयी।।2।।
पुराणाद्य प्रक्षीण बंध प्रभु, प्रज्ञाधर प्राकृत परिपूर्ण।
निर्विशेषवित् ध्याननाथ जिन, बल अनंत धारी जगपूर्ण।।
बोधि प्रदायक बोध रूप बहु, श्रुत ब्रह्मात्मा ब्रह्म विलास।
कलामूर्ति गणनाथ सुतिष्ठित, सम्प्रतिनाथ स्वरूप विकास।।3।।
संवर रूपी सुप्रसन्न जिन, सज्जन वल्लभ सामायिक।
प्रत्यग्ज्योति परम पददाता, परम प्रतीति परम क्षायिक।।
चेतन वंशी चंद्रोपम जिन, चरित्रनाथ चित् संतानी।
चतु-रशीति लक्षण निश्चिन्ता, हिम चेतयिता सदज्ञानी।।4।।
चित्स्वभाव चैतन्य धातु चित्, उदय रूप चित्पिंड अखण्ड।
गुण निवास उद्योतवान प्रभु, गुण निधि तेजोमयी प्रचंड।।
दिव्य ज्योति दुर्नय तमनाशी, दिव्य स्वरूप दयार्णव पूर।
विघ्न विनाशक विपुल प्रभामय, विपुलोद्योति ज्ञान अमपूर।।5।।
मैं भी गुण अनंत का स्वामी, सदा सिद्ध सम परमातम।
निज स्वरूप ज्ञायक प्रगटाऊँ, ध्यान करूँ निज शुद्धातम।।
व्यक्ताव्यक्त ज्ञानविद् विभुवर, लोकनाथ रविरत्न करंड।
रस रागादि विहीन योगभृत, रम्य यशस्वी वरद अमंड।।6।।
युगाधीश युग ज्येष्ठ लोकपति, लोकोत्तम त्रैलोक्यजयी।
लोकालोक प्रकाशक रवि प्रभ, लोकेश्वर कल्याणमयी।।
जय जय जय जय मुनिसुव्रत प्रभु, आप हुए तीर्थेश महान।
त्रिभुवनपति हे जग के त्राता!, गुण अनंत धारी भगवान।।7।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री मुनिसुव्रतनाथ जी की पूजा

स्थापना

जिनका यश तीनों लोकों में, खुश होके गाया जाता है।
जिनके चरणों में आकर के, माथा हर भक्त झुकाता है।।
श्री मुनिसुव्रत जी की महिमा, जिसका इस जग में पार नहीं।
हमने देखे कई देव विशद, ना मिला आपसा अन्य कहीं।।

दोहा - आओ तिष्ठो मम हृदय, तीर्थंकर भगवान।
विशद हृदय में आपका, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।। विरागोदय-छन्द।।

गिरकर भाव शिला पर मृदुजल, अहं भाव खण्डित करता।
शील स्वभावी नीर सुनिर्मल, श्री जिनचरणों में धरता।।
जल मल के गुण हरण करे शुभ, जल की यह पावन पहचान।
मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

है दुर्गन्ध कषायों की वह, नाश सुगन्धी फैलाए।
निज अस्तित्व मिटाकर चन्दन, सारे जग को महकाए।।
अग्नि जलाती है चन्दन वह, फिर भी सुरभित करे महान।
मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

माया है दुर्गति की दात्री, खण्डित जीवन करे सदैव।
अक्षय प्रभु पाए वह जीवन, जो प्रभु भक्ति में रमता एव।।
बाह्य आवरण हटते निज की, शक्ती नाश करे ज्यों ध्यान।
मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

काम वासना से वासित हो, जीव शक्ति निज करता क्षीण।
भक्ति समर्पण पुण्य प्रदायक, शक्ति जगाए पुष्प नवीन।।
काम वाण क्षय होवे क्षण में, करने से जिनका गुणगान।
मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

मोह पगे षटरस व्यंजन से, मन मोहित हो जाता है।
क्षुधा पूर्ति को खाए निशदिन, पूर्ण नहीं कर पाता है।।
चरु से अर्चन करके नशती, क्षुधा वेदना रही प्रधान।
मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीपक की छवि से प्रेरित हो, सम्यकज्ञान प्रकाश करे।
खाके तिमिर उगलता कालिख, निज का जो आभास करे।।
बाह्य तिमिर को करे प्रकाशित, है दीपक का यह अवदान।
मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

दुख के कारण रागद्वेष हैं, मन को धूमिल करें विशेष।
धूप दशांगी धर्म जगाए, कर्म नाश हो जाए अशेष।।
कर भक्ती अष्टांग नमित्त हो, करके श्री जिन का गुणगान।
मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

भव-भव भ्रमण कराने वाले, भाव जीव के हैं दुखकार।
फल का नाम बड़ा इस जग में, महिमा जिसकी अपरम्पार।।
बीज वपन से तरुणाई तक, फल का करता जग सम्मान।
मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय फलं निर्व. स्वाहा।

जल निर्मल चन्दन शीतलता, पुष्प सुगन्धी करे प्रदान।
अक्षत अक्षय पद दायक है, चरु से क्षुधा का होय निदान।।
दीपक ज्ञान प्रकाशी गाया, कर्म शमन कारी है धूप।
फल है मोक्ष महाफलदायी, अर्घ्य से पाएँ सुपद अनूप।।
जिन पूजा का फल है अनुपम, जिससे मिलता पद निर्वाण।
मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - कर्त्ता हैं जिन धर्म के, तीर्थंकर भगवान।
शांती धारा दे रहे, जिन पद महति महान।।

शान्तये शांति धारा.....

दोहा - शिवपद के राही विशद, जग में हुए प्रसिद्ध।
पुष्पांजलि करके चरण, कार्य होंय सब सिद्ध।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा - जिनको ध्याते भाव से, जग के बालाबाल।
मुनिसुव्रत भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(पद्धड़ि छन्द)

जय मुनिसुव्रत गुण गण अपार, जिनके पद में मम नमस्कार।
दश जन्म के अतिशय किए प्राप्त, दश ज्ञान के पाके बने आप्त।।1।।
देवोंकृत चौदह हैं प्रधान, वसु प्रातिहार्य पाएँ महान।
प्रभु ज्ञानावरणी कर विनाश, कैवल्य ज्ञान करने प्रकाश।।2।।
जिन कर्म दर्शनावरण नाश, निज दर्शाननंत में करें वास।
प्रभु मोहकर्म का कर विनाश, फिर सुख अनन्त में करें वास।।3।।
ना अन्तराय का रहा काम, ना कर्मों का फिर रहा नाम।
सुर समवशरण रचना अपार, करके हर्षित हों बार-बार।।4।।
दे दिव्य देशना ॐकार, सुन भव्य जीव करते विचार।
निज रूप लख्यो आनन्द कार, भव भ्रमत जनों को हो उदार।।5।।
शुभ नय प्रमाण निक्षेप सार, दर्शाएँ कर संशय प्रहार।
प्रभु द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव, निक्षेपों का वर्णो प्रभाव।।6।।
इत्यादि तत्त्व उपदेश देय, नश कर्म शेष निर्वाण लेय।
शिव कूट सुनिर्जर से ऋशीष, प्रगटाए जिनपद नमत शीश।।7।।

दोहा - श्री जिनेन्द्र के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
भाते हैं हम भावना, पाएँ भव से पार।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - मुनिसुव्रत व्रत धार कर, किए कर्म का नाश।
जिनके चरणों में 'विशद', होय हमारा वास।।

(इत्याशीर्वाद)

अर्घ्यावली – दीपार्चना

दोहा - भक्त आपका भाव से, करते हैं गुणगान।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने शिव सोपान।।

(अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

मुनिसुव्रत व्रत के धारी, मंगलमय मंगलकारी।
परम पूज्य हैं अनगारी, पावन छियालिस गुणधारी।।
वीतरागमय अविकारी, तीनलोक के अघहारी।
जगतपूज्य अतिशय धारी, प्रभो! जगत विस्मयकारी।।
धर्म ध्यान के अधिकारी, ज्ञान दिवाकर शिवकारी।
पंच परम संयम धारी, कर्म घातिया के हारी।।
अनन्त चतुष्टय के धारी, सिद्ध शिला के अधिकारी।
दिव्य देशना दातारी, तीर्थंकर पदवी धारी।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं अवधिज्ञान बुद्धिऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्त्ये दीपकं स्थापयामि।

वैभव दर्शन

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

अपराजित से चय आये, राजगृही नगरी पाए।
नृप सुमित्र जी कहलाए, माँ श्यामा देवी पाए।।
कछुआ पग लक्षण पाए, श्याम रंग के कहलाए।
तीस हजार वर्ष भाई, आयु प्रभु जी ने पाई।।
बीस धनुष थी ऊँचाई, प्रभू कहे हैं शिवदायी।
उल्का पतन देख स्वामी, हुए विरागी शिवगामी।।
चम्पक वन में प्रभु जाते, आप स्वयं दीक्षा पाते।
अष्टादश गणधर गाए, तीस सहस ऋषिवर पाए।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं विशिष्ट वैभव प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं मनःपर्ययज्ञान बुद्धिऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

गर्भ कल्याणक

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

पूर्व भवों में पुण्य किया, जिसका फल प्रभु आज लिया।
सोलह भावना भाए हैं, करुणा उर में पाए हैं।।
तीर्थंकर प्रकृति भाई, जिसके फल से प्रभु पाई।
सोलह स्वप्न देख माता, पाए मन में जो साता।।
आज गर्भ अवतार हुआ, स्वप्न विशद साकार हुआ।
श्रावण वदि द्वितिया पाए, प्रभू गर्भ में जो आए।।
रत्न वृष्टि तब देव किए, राजगृही अवतार लिए।
आज गर्भ कल्याणक हम, मना रहे हैं शांति प्रदम्।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्ण द्वितियाम गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञान बुद्धिऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्था.।

जन्म कल्याणक

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

वदि वैसाख दशें आई, भारी जो खुशियाँ लाई।
जन्म प्रभु जी जब पाए, राजगृही उत्सव छाए।।
तीर्थंकर का जन्मोत्सव, हुआ वहाँ पर देवोत्सव।
अहो जन्म कल्याणक है, जीवों को सुखदायक है।।
इन्द्र राज खुश हो आए, गज ऐरावत जो लाए।
जो सुमेरु पर ले जाए, न्हवन हर्षमय करवाए।।
चिन्ह देख शुभ नाम दिया, मुनिसुव्रत जय गान किया।
शचि प्रभु का श्रंगार अरे!, हर्षित होकर श्रेष्ठ करे।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण दशम्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

ॐ ह्रीं अर्हं बीज बुद्धि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

तप कल्याणक

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

जाति स्मृति प्रभुने पाई, चेतन की सुधि तव आयी।
भेद ज्ञान था प्रगटाया, समझ गये तन की माया।।
पुद्गल जड़ है अज्ञानी, मैं चेतन चिन्मय ज्ञानी।
आत्म तत्त्व का रूप नहीं, रूपी आत्म स्वरूप नहीं।।
वदि वैसाख दशें पाए, विशद भावना प्रभु भाए।
उर वैराग्य उमड़ आया, प्रभु ने संयम को पाया।।
लौकान्तिक सुर तब आए, संस्तुति करके गुण गाए।
अपराजित शिविका लाए, देव नील वन पहुँचाए।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण दशम्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्व.।
ॐ ह्रीं अर्हं कोष्ठ बुद्धिऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

ज्ञान कल्याणक

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

संयम धर सन्यास लिए, निज आतम का ध्यान किए।
प्रभू मौन के धारी हो, तन मन से अविकारी हो।।
रहे प्रभू प्रतिमासन से, खड्गासन वीरासन से।
स्थिर हो सर्वांगासन, उत्तम-उत्तम ध्यानासन।।
शुक्ल ध्यान परिपूर्ण किए, कर्म शिखर चकचूर किए ।
वदि वैशाख नौमि पाए, विशद ज्ञान प्रभु प्रगटाए।।
दिव्य ध्वनि का दान दिए, सर्व जगत कल्याण किए।
यहाँ ज्ञान कल्याणक हम, मना रहे हैं ज्ञानप्रदम्।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्ण नवम्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं पादानुसारि बुद्धिऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

मोक्ष कल्याणक

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

गिरि सम्मेद शिखर आए, निर्जर कूट प्रभू पाए।
अपने सारे कर्म क्षये, भव सिन्धू से पार गये।।
फागुन वदि बारस गाई, प्रभू मोक्ष पदवी पाई।
हुए आप शिवपुर वासी, पद पाए प्रभु अविनाशी।।
नित्य निरंजन अविकारी, सिद्ध हुए मंगलकारी।
वसु कर्मों के उच्छेदक, ज्ञाता दृष्टा भव भेदक।।
निज स्वभाव में वास किए, समरस का आस्वाद लिए।
हुए सिद्ध मेरे भगवन्, हमको भी दो सिद्ध सदन।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं फागुनकृष्ण द्वादश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्व.।
ॐ ह्रीं अर्हं संभिन्न संश्रोतृत्व बुद्धि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

महागुरु

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

महाव्रती जो व्रतियों में, महा सुयति जो यतियों में।
महासुगुरु हैं गुरुओं में, कल्प तरु हैं तरुओं में।
ज्ञान सुनिधि के हैं सागर, गुण रत्नों के रत्नाकर।।
जग में पावन ज्ञेय रहे, ध्याताओं के ध्येय रहे।
सभी आपको ध्याते हैं, महिमा अतिशय गाते हैं।।
निरालम्ब हो आप विभो!,भव्यों के आलम्ब प्रभो!।
जग के आप विधाता हो, कण-कण के प्रभु ज्ञाता हो।।
भक्ती मम स्वीकार करो, हे प्रभु! भव से पार करो।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं महागुरुता प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं दूरास्वादित्व बुद्धि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

अरहंत

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

अर्हत् राग विहीन कहे, जगत पूज्य शिवकंत रहे।
धर्म तीर्थ के कर्त्ता हे!, मुक्ति वधु के भर्त्ता हे!।।
अरिरज रहस विहीन कहे, गुणागार स्वाधीन रहे।
निज स्वभाव में लीन प्रभो!, केवल ज्ञान प्रवीण विभो!।।
नाथ! आपकी दिव्य ध्वनी, जीवों ने जो जहाँ सुनी।
प्रेम परस्पर में पाए, क्षमा क्षेम को अपनाए।
आप हुए गुण के आकर, गुणानन्तके रत्नाकर।
दाह निकन्दन हे चंदन!, मन वच तन तव पद वन्दन।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं अरहंत पद प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं दूरस्पर्शत्व बुद्धि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

सिद्ध

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

प्रभु जी सिद्ध स्वपद पाए, निज स्वभाव जो प्रगटाए।
अष्ट कर्म से मुक्त हुए, अष्ट गुणों संयुक्त हुए।।
ज्ञान अनन्त जगाए हैं, दर्शन गुण प्रगटाए हैं।
सुखानन्त प्रभु जी पाए, बलानन्त संयुत गाए।।
गुण सूक्ष्मत्व जगाए हैं, अवगाहन गुण पाए हैं ।
अव्याबाध सुगुणधारी, अगुरुलघु धर अनगारी।।
द्रव्य भाव नोकर्म नहीं, जहाँ अशाश्वत धर्म नहीं।
पुण्य पाप का नाम नहीं, दुख चिंता का काम नहीं।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं सिद्ध पद प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं दूरघ्राणत्व बुद्धि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

मंगल

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

मंगल पुण्य प्रदाता हैं मंगल मंगल दाता हैं।
मंगल पाप गलाता है, मंगल सुख को लाता है।।
मंगल क्षेम प्रदायक हैं, मंगल मंगल दायक हैं।
मंगल शिव परिचायक हैं, मोक्ष मार्ग दर्शायक हैं।।
मंगल पावन चार कहे, अर्हत् मंगलकार रहे।
परम सिद्ध मंगल कारी, सर्व साधु हैं अनगारी।।
मंगलमय धर्माराधन, परम मोक्ष का है साधन।
अतः मंगलाचरण करें, अपने सारे पाप हरें।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं दूरश्रवणत्व बुद्धि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

उत्तम

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

चार कहे जग के उत्तम, विश्व वंद्य उत्कृष्ट परम।
लोक पूज्य अर्हन्त जिनम्, हरने वाले सारे गम।।
प्रथम कहे उत्तम अर्हन्, कर्म घातिया किए शमन।
दूजे सिद्ध श्री पाए, आठ मूलगुण प्रगटाए।।
तीजे सर्व साधु उत्तम, हरने वाले सर्व करम।
परम केवली कथित धरम, रहा लोक में सर्वोत्तम।।
करने से जिन चरण नमन, भाव सहित जिन पद अर्चन।
हो जाते हैं कर्म शमन, जीवन हो ये विशद चमन।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं सर्व उत्तम रूप श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं दूरदर्शनत्व बुद्धि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

शरण

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

सुर नर नाग रहे अशरण, करते हैं जो जन्म मरण।
दर्श ज्ञान हो सदाचरण, होय कर्म का तभी क्षरण।।
रहे लोक में चार शरण, जिनको करना सदा वरण।
मोक्ष मार्ग पर होय गमन, जीवन होगा तभी चमन।।
पूज्य रहे अरहंत चरण, दूजी गाई सिद्ध शरण।
सर्व साधु जग तार तरण, जैन धर्म करते धारण।।
शिव नगरी के संस्थापक, पावन शिवपथ के नायक।
निज आतम के प्रच्छालक, रहे स्वयं के संचालक।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं सर्व जगत् शरण दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं दशपूर्वित्व बुद्धि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

आगम

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

तत्त्व बोधनी जिनवाणी, अखिल विश्व की कल्याणी।
पावन है जिनकी वाणी, वीतराग मय विज्ञानी।।
अंग बाह्य श्रुत ज्ञान कहा, भेद अनेकों रूप रहा।
अंग प्रवृष्टी के भाई, ग्यारह भेद हैं शिवदायी।।
आगम का इक इक अक्षर, हृदय में धारे कोई अगर।
हरने वाले सर्व विपद, काम आऐंगें ये पद-पद।।
जिनवाणी का ज्ञान करें, सुधी सुधारस पान करें।
मन से मन में मनन करें, अपना जीवन चमन करें।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं जिनागम स्वरूप श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वित्व बुद्धि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

जिनचैत्य

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

श्री जिनवर की प्रतिमाएँ, वीतरागता दर्शाएँ।
सहज शांत मुद्रा पाएँ, भवि जीवों के मन भाएँ।।
रहे निरायुध निर्भय जो, निर्विकार इन्द्रिय जय जो।
अशन वशन आभरण नहीं, और दिखें ना अन्य कहीं।।
सहज शांत मुद्रा धारी, परम दिगम्बर अविकारी।
आनन पे आनन्द रहा, भाव शुद्धि का छन्द रहा।।
मूरत अति मन भावन है, शांति विधायी पावन है।
भक्त भक्ति कर झूम रहे, चरणाम्बुज जो चूम रहे।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं जिनचैत्य स्वरूप श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अष्टांगमहानिमित्त बुद्धि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

चैत्यालय

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

जय जय जय जिन चैत्यालय, जिन बिम्बों के शुभ आलय।
पाप विनाशक पुण्यालय, कष्ट निवारक सौख्यालय।।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय, धर्म प्रकाशक धर्मालय।
श्री जिनेन्द्र के प्रतिमालय, सद् भक्तों के प्रतिभालय।।
घण्टा ध्वज तोरण वाले, सुन्दर दिखते हैं आले।
समवशरण के प्रतिरूपक, चिन्मयता के चिद्रूपक।।
भवहर भवन विमानों में, व्यन्तर ज्योतिष यानों में।
कहे गये जो शांति सदन, चैत्यालय को विशद नमन।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं जिन चैत्यालय स्वरूप श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञाश्रमणत्व बुद्धि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

अतिशय महिमा

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

अनुपम अगम जिनेश्वर की, अमल रूप परमेश्वर की।
अतिशय महिमा गाने में, अनुपम काव्य रचाने में।।
पूर्ण रूपता शक्ति कहाँ, शब्द अर्थ स्वर युक्ति कहाँ।
हम जैसे अल्पज्ञ प्रभो!, छन्दों से अनभिज्ञ विभो!।।
है महान अर्हत् महिमा, ना सक्षम गाने गरिमा।
श्री जिनेन्द्र गुण के आगर, विशद गुणों के हैं सागर।।
हो विशाल बुद्धी वाला, द्वादशांग मति धी वाला।
सुर गुरु पूर्ण समर्थ नहीं, भक्ती जाए व्यर्थ नहीं।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं अतिशय महिमा दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

अशोक प्रातिहार्य

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

समवशरण के स्थल में, धर्म देशना के पल में।
मणि मुक्ता सम चमक रहे, उदयाचल से दमक रहे।।
पत्र लता फल शाखाएँ, अतिशय महिमा दिखलाएँ।
तरु अशोक कहलाता है, शोक नहीं रह पाता है।।
हो प्रभाव जड़ के ऊपर, पड़े नहीं क्यों चेतन पर।
सूर्योदय ज्यों हो जाए, अन्धकार ना रह पाए।
होय प्रफुल्लित कौन नहीं, पुलकित हो ना कौन कहीं।
जगत प्रफुल्लित हुआ अहा, प्रभु का विशद प्रभाव रहा।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं अशोक प्रातिहार्य प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं वादित्व बुद्धि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

पुष्प वृष्टि

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

पुष्प गगन से वर्षाते, सुरगण मन में हर्षाते।
समवशरण महिमा शाली, जन मन में हो खुशहाली।।
यह आश्चर्य हुआ जिनवर, अद्भुत कार्य हुआ प्रभुवर।
पुष्प पाँखुड़ी ऊपर हो, डण्ठल सदा निम्नतर हो।।
प्रभु चरणों में आते हैं, मानो महिमा गाते हैं।
ज्यों भौरे मडराते हैं, मधुकर से मधु पाते हैं।।
शुभम् भाव अपनाते हैं, ना विकार मन लाते हैं।
कर्मों का अपकर्ष करें, धर्म भाव उत्कर्ष करें।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।19।।

ॐ ह्रीं पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविक्रिया ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

दिव्य ध्वनि

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

श्री जिनेन्द्र के वचनों को, मंगलमय प्रवचनों को।
दिव्य ध्वनि कहते ज्ञानी, जग जन की जो कल्याणी।।
अष्टादश महाभाषामय, सप्त शतक लघु भाषामय।
अनेकांतमय शुभकारी, स्याद्वाद युत मनहारी।।
ॐकार मय जो गाई, अमृत वाणी कहलाई।
कर्णांजलि से पी करके, रसास्वाद अनुभव करके।।
जग को परमानन्द मिले, भविजन मन के सुमन खिले।
भव्य जीव रस पान करें, अजर अमर शिव धाम वरें।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।20।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं नभस्तलगामिचारण ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

चंवर

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

रजत कांति सम धवल कहे, चँवर ढुराते इन्द्र रहे।
ऊपर से नीचे आते, नम्र भाव जो दिखलाते।।
धीरे-धीरे डोल रहे, मानो मन से बोल रहे।
यह माने हम हे स्वामी! हे जिनेन्द्र अन्तर्यामी।।
पुण्डरीक पुरुषोत्तम हे!, सर्वोत्तम देवोत्तम हे!।
तीर्थंकर परमोत्तम हे!, परम देह चरमोत्तम हे!।।
निर्मल भाव बनाए हैं, आप शरण में आए हैं।
भक्ति भाव से नमन करें, ऊर्ध्व लोक में गमन करें।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।21।।

ॐ ह्रीं चंवर प्रातिहार्य प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं जलचारणक्रिया ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

सिंहासन

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

तीर्थंकर का आसन है, स्वर्ण मयी सिंहासन है।
रत्नखचित है मनहारी, आसन्दी प्रभु की प्यारी।।
चार पाद जिसमें जानो, अनन्त चतुष्टय से मानो।
जैसे अचल सुदर्शन पर, स्वर्णाचल गिरिवर मन्दर।।
प्रभु आभा से जो सोहें, भव्यों के मन को मोहें।
श्याम वर्ण में जिन स्वामी, शोभित हो अन्तर्यामी।।
हर्ष विभोर करें दर्शन, अतिशय कारी आकर्षण।
वर्णन करना कठिन रहा, नहीं कोई कह सके अहा।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।22।।

ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं जंघाचारणक्रिया ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

भामण्डल

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

नव्य सृष्टि का भामण्डल, कांतिमान आभामण्डल।
किरणावलि सा चमक रहा, निज आभा से दमक रहा।।
नील वर्ण आभा वाला, घेर रही हो ज्यों माला।
उदयाचल पर रवि जैसे, सोहे भामण्डल वैसे।।
तरु अशोक लज्जित होवें, मानो निज आभा खोवें।
पत्रों की छवि घट जाए, कांति नहीं फिर जो पाए।।
वीतराग प्रभु का दर्शन, गुण समूह का आकर्षण।
राग रंग ना खोता क्या?, मन विराग ना होवे क्या।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।23।।

ॐ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्य प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं फलपुष्प पत्रचारण क्रिया ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

देव दुन्दुभि

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

देव दुन्दुभी बजती है, सूचित सबको करती है।
रे-रे प्राणी जग जाओ, आतम हित में लग जाओ।।
आमंत्रण यह भेज रही, जग में दे सन्देश सही।
समवशरण में आना है, मोक्ष पुरी में जाना है।।
भक्ती हृदय जगाना है, जीवन सफल बनाना है।
जिन मण्डप में आ जाओ, मुनिसुव्रत के गुण गाओ।।
रहे सारथी शिव पथ के, महारथी हैं शिवरथ के।
रथ में आप बिठाते हैं, सिद्ध सदन ले जाते हैं।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।24।।

ॐ ह्रीं दुन्दुभि प्रातिहार्य प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अग्निधूमचारण क्रिया ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

छत्रत्रय

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।
श्री जिनेन्द्र के आने से, ज्ञानोदय हो जाने से।
मोह तिमिर का होय विलय, होय प्रकाशित लोक त्रय।।
चन्द्र बिम्ब आभा दायक, तारागण रजनी नायक।
कांतिमान मलीन हुआ, जो अधिकार विहीन हुआ।।
कांतिमान फिर नहीं रहे, गगन मध्य वह कहीं रहे।
छत्र त्रय आभा वाला, मोती की जिसमें माला।।
तीन लोक के ईश्वर हैं, परम पूज्य जगदीश्वर हैं।
छत्रत्रय दर्शाते हैं, विनयी भाव जगाते हैं।।
विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।25।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्य प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं मेघधारा चारणक्रिया ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

दोहा - मंगल उत्तम शरण हैं, अर्हत सिद्ध ऋषीश।
प्रातिहार्याधीश पद, झुका रहे हम शीश।।

गंधकुटी स्थित मुनिसुव्रतनाथ

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।
समवशरण में अतिशायी, गंध कुटी सोहे भाई।
कांति सुमणि माणिक मणियाँ, हीरा मोती की लड़ियाँ।।
होय रजत मय से रचना, तीन पीठिका युक्त बना।
अष्ट द्रव्य शोभा पाएँ, श्रेष्ठ ध्वज फहराएँ।।
कमल कांतिमय श्रेष्ठ रहा, सिंहासन शुभकार अहा।
ऊपर चउ अंगुल स्वामी, शोभा पाएँ शिवगामी।।
महाप्रतापी महिमा धर, मुनिसुव्रत जी तीर्थंकर।
गुण समूह से भूषित हैं, तीन लोक आपूरित हैं।।
विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।26।।

ॐ ह्रीं गंधकुटी प्रातिहार्य प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं तन्तुचारणक्रिया ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

सुरपूज्य

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।
नम्र हुए सुर वृन्दों के, भवनात्रिक नागेन्द्रों के।
मुकुटों में मण्डित मणियाँ, मुक्तामणि चित्रित लड़ियाँ।।
मौलि सुमणि की आभाएँ, जिन पद में आश्रय पाएँ।
सत्य बात है यह स्वामी, वीतराग जिन निष्कामी।।
शुभ मन वाले जो प्राणी, भव्य जीव सम्यकज्ञानी।
एक ठिकाना पाते हैं, अन्य कहीं ना जाते हैं।।
सत्य कथन तो यही रहा, माने सारा जगत अहा।
मुनिसुव्रत की शरण अरे!, चरण कमल में रमण करे।।
विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।27।।

ॐ ह्रीं सुरपूज्य श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेन्द्राय निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिष चारणक्रिया ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

इच्छित फल प्रदायक

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।
नाथ आपसे रहे विमुख, हुआ आपके जो अभिमुख।
उनको पार उतारा है, भव सिन्धू से तारा है।।
तारण हार कहाते हो, जगत पूज्यता पाते हो।
अखिल विश्व के वे प्राणी, जीवन जिनका जिनवाणी।।
झूठे जग के जल्पों में, तज संकल्प विकल्पों में।
चिन्तायें जंजालों को ,परिजन या घरवालों को।।
श्री जिन के पद कमलों को, श्रद्धास्पद पद युगलों को।
करके वन्दन आराधन, उनका भी हो अभिनन्दन।।
विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।28।।

ॐ ह्रीं इच्छित फल प्रदायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं मरूचारण क्रिया ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

जगत बान्धवत

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

जगत बन्धु तीर्थंकर का, जग बान्धव शिव शंकर का।
ऋद्धी धार ऋषीशों का, सच्चे देव मुनीशों का।।
वाद्ययंत्र मय गीतों से, सुर तालों संगीतों से।
जिन अर्चा कर हर्षाएँ, अतिशायी महिमा गाएँ।।
मुझ अबोध ने निश्चय से, अन्य किसी भी आशय से।
अन्तस् में ना बैठाया, आत्म भाव से ना ध्याया।।
भक्ति रहित आचार अमल, कभी न देवे मुक्ती फल।
हुए ना निज के अनुरागी, अतः हुए दुख के भागी।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।29।।

ॐ ह्रीं जगत बान्धवत श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वतपः ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

आश्रय दाता

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

जग पावन कर्त्ता जिनवर, गुणानंत भर्त्ता प्रभुवर।
शरणागत आश्रय दाता, चरणागत के हे त्राता!।।
मोक्ष मार्ग के नेता हे!, कर्म शत्रु के जेता हे!।
हे प्रसिद्ध महिमा धारी!, विशद सिद्ध महिमाकारी।।
तव चरणाम्बुज जो पाए, भक्ति भाव मन में लाए।
करुणाकर करुणा करके, दया भाव मुझ पर धरके।।
दुःखांकुर का दलन करो, भव बीजांकुर शमन करो।
नाथ! करो अन्धेर नहीं, करो नहीं प्रभु देर कहीं।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।30।।

ॐ ह्रीं आश्रय दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अघोर ब्रह्मचारिरस्त्वतपः ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

दुखहर्त्ता जिन

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

अखिल विश्व के ज्ञाता हे! जिन सर्वज्ञ विधाता हे।
वन्दनीय शत इन्द्रों से, अर्चनीय देवेन्द्रों से।।
भूतल के हर कण-कण को, भूत भविष्यत इस क्षण को।
निज स्वभाव से जान रहे, केवल बोध प्रमाण रहे।।
जगती पति भव तार कहे, जन-जन के उद्धार कहे।
आप बचाओ आकर के, इस अथाह भव सागर से।।
दुखिया के दुख दूर करो, प्रभु सुख से भरपूर करो।
मुनिसुव्रत मेरे भगवन्, पावन कर दो मम जीवन।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।31।।

ॐ ह्रीं दुखहर्त्ता श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं मनोबल ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

परम आदर्श

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

प्रभु आदर्श हमारे हो, तुम ही एक सहारे हो।
तुम चरणों का चेरा मैं, करता चरण बसेरा मैं।।
तव चरणों की भक्ती का, निज भावों की शक्ती का।
लाभ जीव यह पाते हैं, जीवन सफल बनाते हैं।।
धन वैभव की आश नहीं, पर भव सुख की प्यास नहीं।
केवल इतना दान मिले, वरद हस्त वरदान मिले।।
आप हमारे स्वामी हो, नयनों के पथगामी हो।
जन्म जन्म तुम साथ रहे, तव पद मेरा माथ रहे।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।32।।

ॐ ह्रीं सर्व परम आदर्श रूप श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं वचनबल ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

वैभव प्रदायक

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

निश्चल हो निज योगों में, शुभ भावों उपयोगों में।
मुख मण्डल मनहर सुन्दर, दर्श करें जिनका शुभकर।।
अंग अंग पुलकित होकर, अन्तः करण मुदित होकर।
रोम-रोम हर श्वासों से, प्रमुदित हो उल्लासों से।।
विधि विधान अपनाते हैं, मन में तुम्हें बसाते हैं।
कल्मष पूर्ण नशाते हैं, परम मोक्ष पद पाते हैं।।
भक्ति आपकी मन भायी, विशद संस्तुति यह गाई।
भक्त अमर बन जाते हैं, स्वर्ग सम्पदा पाते हैं।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।33।।

ॐ ह्रीं अतिशय वैभव प्रदायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं कायबल ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

बन्ध उच्छेदक

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

वीतरागमय अविकारी, प्रभो! आपकी छवि न्यारी।
हृदय कमल में आ जाए, मन में रूप समा जाए।।
जन्म जन्म के बन्धन हैं, कर्मों के अनुबन्धन हैं।
ढीले क्षण में पड़ जाते, या फिर छोड़ चले जाते।।
आएँ अनेकों विपदाएँ, एक साथ सब आ जाएँ।
जीवन की ना आशा हो, मन में भरी निराशा हो।।
दर्श आपका जो पाए, विपदा सारी टल जाए।
छूटे भव के बन्धन से, दुःखों कष्टों क्रन्दन से।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।34।।

ॐ ह्रीं भव बन्धोच्छेदक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं आमर्षौषधि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

तारण तरण

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

तारण तरण कहाते हैं, भव से पार लगाते हैं।
सच्चे भक्त कहाते हैं, हृदय बीच बैठाते हैं।।
साथ आपका पाते हैं, पार स्वयं हो जाते हैं।
बात सभी ज्ञानी जाने, चमत्कार प्रभु का मानें।।
लोक रीति यह गाई है, लोगों ने बतलाई है।
हवा मसक में भरते हैं, सिन्धू पार उतरते हैं।।
भक्त हृदय में भर स्वामी, पार करो भव जग नामी।
अतः आपको ध्याते हैं, अपने हृदय सजाते हैं।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।35।।

ॐ ह्रीं तारण तरण श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्वेलौषधि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

कामजयी

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

मदन पराजित आप कहे, सुन्दर तन से शोभ रहे।
ब्रह्मा शिव शंकर कोई, हरिहरादि होवें सोई।।
इन्द्रादिक भी हीन हुए, तीनों लोक अदीन हुए।
अतिप्रचण्ड दावानल हो, बरसे बादल का जल हो।।
अग्नी शीघ्र बुझाता है, जल को कौन जलाता है।
किन्तु कहीं बड़वानल है, जलता सागर का जल है।।
प्रभो! आप बड़वानल हैं, कामदेव सागर जल हैं।
कामदेव को जला दिये, विजय मरण पर आप किये।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।36।।

ॐ ह्रीं कामविजयी श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं जल्लौषधि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

वीतरागता

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

हे अनन्त बल के स्वामी!, वीतरागमय शिवगामी।
जग में आप निराले हैं, सचमुच विस्मय वाले हैं।।
आप क्रोध को जला दिए, कैसा अनुपम काम किए।
कर्म चोर जब आते हैं, आके ज्ञान चुराते हैं।।
फिर कैसे जय कर पाए, विश्व विजयी प्रभु कहलाए।
कर्मों पर जय पाई है, विस्मयता दर्शायी है।।
अरस अरूप निजातम को, परम रूप परमातम को।
योगी ध्यान लगाते हैं, निज को निज में पाते हैं।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।37।।

ॐ ह्रीं वीतरागता युत श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं मल्लौषधि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

अगणित गुणधर

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

हम अल्पज्ञ हैं अज्ञानी, आप रहे केवल ज्ञानी।
सम्यक् दर्शन के धारी, सच्चारित धर अनगारी।।
कोई मानव निश्चय हो, गुण गणना को तन्मय हो।
क्या गणना कर पाएगा, क्या समर्थ हो जाएगा।।
ज्यों सिन्धू में रत्न भरे, गणना में ना आएँ अरे!।
हे स्वामिन् तव गुण सारे, निज अनन्त महिमा धारे।।
गुण गाने तैयार हुए, हम अबोध लाचार हुए।
गुण गाने का भाव रहा, भक्ती का शैलाब रहा।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।38।।

ॐ ह्रीं अनन्त गुणधर श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं विप्रुषौषधि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

परम अर्चनीय

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

बालक कोई चंचल हो, अन्दर बाहर निश्छल हो।
हाथों को फैलाता है, तुतला के बतलाता है।।
सागर का विस्तार प्रभो!, क्या कहता है नहीं विभो!।
सचमुच बालक कहता है, मानो उसकी जड़ता है।।
आप कथन में ना आते, अनुभव नहीं कहे जाते।
फिर भी योगी ध्याते हैं, सुगुण आपके गाते हैं।।
मुझे नहीं कुछ ज्ञान प्रभो!, कैसे हो कल्याण विभो!।
बिना विचारे बोल रहे, अन्तर के पट खोल रहे।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।39।।

ॐ ह्रीं परम अर्चनीय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वौषधि ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

संताप नाशक

मुनिसुव्रत जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद शांति प्रगटाने निज में, प्रभु की महिमा गाते हैं।।

हे जिनेन्द्र महिमा धारी!, महा महिम मंगलकारी।
संस्तव करना दूर रहा, नाम मात्र भरपूर कहा।।
आप नाम का उच्चारण, है जिनेन्द्र सुख का कारण।
भव-भव का दुखहारी है, उभय लोक सुखकारी है।।
ज्यों रवि भू संतप्त करे, सारे जग को तप्त करे।
राही प्यासा आकुल हो, दूर जलाशय में जल हो।।
निर्मल सजल सरोवर से, पवन उठे जल भर-भर के।
होवे जो शीतलकारी, तीव्र तपन हर ले सारी।।

विश्व शांति की महा कामना, से श्री जिन को ध्याते हैं।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत की, महिमा अतिशय गाते हैं।।40।।

ॐ ह्रीं संताप नाशक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं मुखनिर्विष ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्तये दीपकं स्थापयामि।

मुनिसुव्रत जिनवर की जय हो, पावन तीर्थंकर की जय हो।
पावन भू अम्बर की जय हो, गिरि सम्मेद शिखर की जय हो।।

सोरठा - मुनिसुव्रत भगवान, कर्म नाशकर शिवगये।
करते हम गुणगान, श्री जिनवर का भाव से।।

हे त्याग मूर्ति करुणा निधान!, हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर!।
हे ज्ञान सुधाकर! तेजपुंज, सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर।।
हे परं ब्रह्म! हे पद्माकर!, हे पद्मावति माँ के नन्दन।!
हम अष्ट द्रव्य से करते हैं, प्रभु भाव सहित पद में अर्चन।।
हे नाथ! हमारे अन्तर में, आकर के आप समा जाओ।
हम भूले भटके राही हैं, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ।।
चलो चलो रे! सभी नरनार, प्रभु के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वन्दन को।।41।।

ॐ ह्रीं सन्मार्ग प्रदायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिनिर्विष ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्त्ये दीपकं स्थापयामि।

मुनिसुव्रत जिनवर की जय हो, पावन तीर्थंकर की जय हो।
पावन भू अम्बर की जय हो, गिरि सम्मेद शिखर की जय हो।।

सोरठा - भूपर किए प्रयाण, स्वर्ग लोक से चय किए।
हुआ जगत कल्याण, नाथ आपके जन्म से।।

हे परम पूज्य करुणा निधान!, हे ज्ञान दिवाकर योगीश्वर!।
हे भवि जीवों के दुख हर्ता!, हे शांति प्रदायक तीर्थेश्वर!।।
हे धर्म प्रकाशक धर्मालय!, हे पाप विनाशक जिन भवहर!।
हे जिन भक्तों के प्रतिमालय!, सर्वज्ञ प्रभु हे परमेश्वर!।
हे समवशरण के अधिनायक!, हे चिन्मयता के चिद्रूपक!।
भव तापों के हे शांति सदन!, तव चरणों में शत् शत् वन्दन।।
चलो चलो रे! सभी नरनार, प्रभु के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वन्दन को।।42।।

ॐ ह्रीं दिव्य दिवाकर श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिविष ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्त्ये दीपकं स्थापयामि।

मुनिसुव्रत जिनवर की जय हो, पावन तीर्थंकर की जय हो।
पावन भू अम्बर की जय हो, गिरि सम्मेद शिखर की जय हो।।

सोरठा -तव चरणों हे नाथ!, भक्ती करते भाव से।
चरण झुकाते माथ, तीन योग से हम विशद।।

हे शांति निकेतन चन्द्रानन!, हे दुःख विनाशक सौख्यालय!।
हे धर्मोपदेशक ज्ञानेश्वर!, हे वीतराग मय प्रतिमालय!।।
हे वीतराग जिनराज परम!, हे जग त्राता गुण के आकर!।
हे मोक्ष सदन के अधिनायक!, हे विश्व शांतिकर विश्वेश्वर!।।
हे नाथ कृपाकर के मेरे!, मन के मंदिर में आ जाओ।
हम मोह अन्ध से अंध हुए ,हमको शिवराह दिखा जाओ।।
चलो चलो रे! सभी नरनार, प्रभु के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वन्दन को।।43।।

ॐ ह्रीं विश्वेश्वर श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं क्षीरस्रावि रस ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्त्ये दीपकं स्थापयामि।

मुनिसुव्रत जिनवर की जय हो, पावन तीर्थंकर की जय हो।
पावन भू अम्बर की जय हो, गिरि सम्मेद शिखर की जय हो।।

सोरठा - हुए आप सर्व, ज्ञाता तीनों लोक के।
चरण पड़े हैं अज्ञ, ज्ञान सुरभि प्रभु दीजिए।।

हे करुणाकर करुणा निधान!, हे धर्म दिवाकर हे ईश्वर!।
हे तपोमूर्ति हे तेज पुंज!, हे देव दिवाकर हे भूधर!।।
हे धर्मप्रवर्तक पृथ्वीपति!, हे सम्यक तप के सद आकर!।
हे सहज शांत निर्भय साधक!, हे विश्व शांतिमय गुणसागर!।।
हे त्रिभुवन पति करुणा निधान!, तव चरण कमल में है अर्चन।
हम तीन योग से गुण गाते, कर चरणों में सादर वन्दन।।
चलो चलो रे! सभी नरनार, प्रभु के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वन्दन को।।44।।

ॐ ह्रीं धर्म दिवाकर श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं मधुस्रावि रस ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्त्ये दीपकं स्थापयामि।

शिव साधक

मुनिसुव्रत जिनवर की जय हो, पावन तीर्थंकर की जय हो।
पावन भू अम्बर की जय हो, गिरि सम्मेद शिखर की जय हो।।

सोरठा - पाए पद निर्वाण, तीर्थराज सम्मेद से।
करके निज का ध्यान, पार हुए भव सिन्धु से।।

हे ज्ञान दिवाकर पृथ्वी पति, हे! शिव साधक हे तीर्थंकर!।
हे सहज शांति दाता पावन, हे ज्ञान मूर्ति हे परमेश्वर!।।
हे दिव्य दिवाकर जगती पति, हे तपो पूत! हे क्षेमंकर!।
हे महाज्ञान! हे महादान!, हे परम प्रभाकर! हे जिनवर!।।
हे विश्व योनि! हे विश्व मूर्ति!, हे विश्वातम! हे शिव साधक।
हे बिम्ब ज्योति! हे जग ज्येष्ठ!, हे भव्य जनों के आराधक!।।
चलो चलो रे! सभी नरनार, प्रभु के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वन्दन को।।45।।

ॐ ह्रीं शिव साधक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतस्रावि रस ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्त्ये दीपकं स्थापयामि।

महाशैलजिन

मुनिसुव्रत जिनवर की जय हो, पावन तीर्थंकर की जय हो।
पावन भू अम्बर की जय हो, गिरि सम्मेद शिखर की जय हो।।

सोरठा - स्वयं प्रभो! भगवान, योगीश्वर मोहारिजित।
करें भक्त गुणगान, तव चरणों में जगत जन।।

हे महा धाम! हे महामदन!, हे महतोदय! हे जगमनहर!।
हे महा शैल! हे महिमा धर!, हे जगत शिरोमणि मंगलकर!।।
हे रोग निवारक महावैद्य!, हे शोक निवारक रक्षाकर!।
हे भव भयहारी अभयंकर!, हे मोह निवारी शिवशंकर!।।
हे कर्म निवारक! हे अर्हत्!, हे व्योममूर्ति अमल अचल!।
हे सहस्राक्ष! हे विश्व शीर्ष!, हे विभोविभव जग मंगल!।।
चलो चलो रे! सभी नरनार, प्रभु के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वन्दन को।।46।।

ॐ ह्रीं महाशैल श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्पि स्रावरिस ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्त्ये दीपकं स्थापयामि।

प्रशमाकर

मुनिसुव्रत जिनवर की जय हो, पावन तीर्थंकर की जय हो।
पावन भू अम्बर की जय हो, गिरि सम्मेद शिखर की जय हो।।

सोरठा - परमेष्ठी परतर परम, परम ब्रह्म योगीश।
शुद्ध बुद्ध तत्त्वज्ञ पद, झुका रहे हम शीश।।

हे महायशा! हे महावीर! हे महानन्द! हे महाज्ञानी!।
हे महा प्राण! हे महाभाग!, हे महा महपति! जग कल्याणी!।।
हे महायोग! हे महाधाम!, हे महासुमति! हे वदतांम्बर!।
हे महासुयति! हे महानीति! हे महाक्षांति! हे प्रशमाकर!।।
हे महाघोष! हे महानाद!, हे महा कांतिधर! महासुगति!।
हे महापराक्रम! के धारी, हे महामंत्र! हे पृथ्वीपति!।।
चलो चलो रे! सभी नरनार, प्रभू के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वन्दन को।।47।।

ॐ ह्रीं प्रशमाकर श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीणमहानस ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्त्ये दीपकं स्थापयामि।

देवाधि देव

मुनिसुव्रत जिनवर की जय हो, पावन तीर्थंकर की जय हो।
पावन भू अम्बर की जय हो, गिरि सम्मेद शिखर की जय हो।।

सोरठा - महिमा का ना पार, पूज्य हैं तीनों लोक में।
वन्दन बारम्बार, जिन पद में मेरा विशद।।

हे प्रणव! प्रणय आनन्द कन्द, प्रच्छीण बन्ध हे कामारी!।
आनन्द नन्द कामद काम्यः, हे कामधेनु जग भय हारी।।
हे महा ध्यानाति महाधर्म, हे महादेव! हे प्रशमाकर!।
हे महामहर्षी महितोदय!, हे क्षान्त दान्त हे योगीश्वर!।।
प्रच्छीण बन्ध हे योगातम!, प्रकृति परमेष्ठी प्रणतेश्वर!।
हे महाक्रोधरिपु! वशीपरम्, स्तुत्य विशद हे स्तुतिश्वर!।।
चलो चलो रे! सभी नरनार, प्रभु के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वन्दन को।।48।।

ॐ ह्रीं देवाधि देव श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीणमहालय ऋद्धि युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः स्वस्त्ये दीपकं स्थापयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा- राही मुक्ती मार्ग के, मुनिसुव्रत भगवान।
विशद भाव से आज हम, करते हैं गुणगान।।

।। जोगीरासा छन्द ।।

प्राणत स्वर्ग से मुनिसुव्रत जिन, चयकर के जब आये।
राजगृही में खुशियाँ छाईं, जग जन सब हर्षाये।।
नृप सुमित्र के राज दुलारे, जय श्यामा माँ गाई।
गर्भ समय पर रत्न इन्द्र कई, वर्षाए थे भाई।।1।।
तीन लोक में खुशियाँ छाईं, घड़ी जन्म की आई।
सहस्राष्ट लक्षण के धारी, बीस धनुष ऊँचाई।।
न्हवन कराया देवेन्द्रों ने, कछुआ चिन्ह बताया।
बीस हजार वर्ष की आयू, श्याम रंग शुभ गाया।।2।।
उल्कापात देखकर स्वामी, शुभ वैराग्य जगाए।
पंच मुष्टि से केश लुंचकर, मुनिवर दीक्षा पाए।।
आत्म ध्यान कर कर्म घातिया, नाश किए जिन स्वामी।
केवल ज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए मोक्ष पथगामी।।3।।
ग्रहारिष्ट शनि के विनिवारी, मुनिसुव्रत कहलाए।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, निज सौभाग्य जगाए।।
सुख शांती सौभाग्य जगाने, तव चरणों हम आए।
'विशद' मोक्ष की राह चलें हम, यही भावना भाए।।4।।

दोहा - अष्टादश गणधर रहे, सुप्रभ प्रथम गणेश।
कूट निर्जरा से प्रभू, नाशे कर्म अशेष।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - मुनिसुव्रत भगवान का, जपूँ निरन्तर नाम।
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, चरणों विशद प्रणाम।।

इत्याशीर्वादः

आरती

तर्ज - इह विध मंगल...

मुनिसुव्रत की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।।टेक।।
नृप सुमित्र के राज दुलारे, माँ श्यामा की आँख के तारे। मुनिसुव्रत...
राजगृही के नृप कहलाए, कछुआ लक्षण पग में पाए।। मुनिसुव्रत...
तीस हजार वर्ष की भाई, श्री जिनवर ने आयू पाई। मुनिसुव्रत...
श्रावण वदी दोज को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी। मुनिसुव्रत...
वदि वैसाख दशें को स्वामी, जन्म लिए त्रिभुवनपति नामी। मुनिसुव्रत...
वैशाख वदी दशमी दिन आया, जिन प्रभु ने संयम को पाया। मुनिसुव्रत...
वैशाख वदी नौमी दिन गाया, प्रभु ने केवलज्ञान उपाया। मुनिसुव्रत...
फाल्गुन वदि बारस को भाई, कर्म नाशकर मुक्ती पाई। मुनिसुव्रत...
गिरि सम्मेद शिखर शुभ गाया, 'विशद' मोक्ष पद प्रभु ने पाया।। मुनिसुव्रत...

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य-खण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते, अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2545 वि. सं. 2075 कार्तिक मासे श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

आचार्य 108 श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत छियालीसा

दोहा - अरहंतों को नमन् कर, सिद्धों का धर ध्यान।
उपाध्याय आचार्य अरु, सर्व साधु गुणवान।।
जैन धर्म आगम 'विशद', चैत्यालय जिनदेव।
मुनिसुव्रत जिनराज को, वंदन करूँ सदैव।।

चौपाई

मुनिसुव्रत जिनराज हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।।१।।
प्रभु हैं वीतरागता धारी, तीन लोक में करुणा कारी।।२।।
भाव सहित उनके गुण गाते, चरण कमल में शीश झुकाते।।३।।
जय जय जय छियालिस गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी।।४।।
देवों के भी देव कहाते, सुरनर पशु तुमरे गुण गाते।।५।।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, सारे जग के आप हो त्राता।।६।।
प्रभु तुम भेष दिगम्बर धारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।।७।।
क्रोध मान माया के नाशी, तुम हो केवलज्ञान प्रकाशी।।८।।
प्रभु की प्रतिमा कितनी सुंदर, दृष्टी सुखद जमी नासा पर।।९।।
खड्गासन से ध्यान लगाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।।१०।।
मध्यलोक पृथ्वी का मानो, उसमें जम्बूद्वीप सुहानो।।११।।
अंग देश उसमें कहलाए, राजगृहि नगरी मन भाए।।१२।।
भूपति वहाँ सुमित्र कहाए, माता पद्मा के उर आए।।१३।।
यादव वंश आपने पाया, कश्यप गोत्र वीर ने गाया।।१४।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आये, गर्भ दोज सावन सुदि पाए।।१५।।
वहाँ पे सुर बालाएँ आईं, माँ की सेवा करें सुभाई।।१६।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, जन्म राजगृह नगरी पाया।।१७।।
इन्द्र सभी मन में हर्षाए, ऐरावत ले द्वारे आये।।१८।।
पांडुकशिला अभिषेक कराया, जन-जन का तब मन हर्षाया।।१९।।
पग में कछुआ चिन्ह दिखाया, मुनिसुव्रत जी नाम कहाया।।२०।।
जन्म से तीन ज्ञान के धारी, क्रीड़ा करते सुखमय भारी।।२१।।
बल विक्रम वैभव को पाए, जग में दीनानाथ कहाए।।२२।।
बीस धनुष तन की ऊँचाई, तन का रंग कृष्ण था भाई।।२३।।
कई वर्षों तक राज्य चलाया, सर्व प्रजा को सुखी बनाया।।२४।।

उल्का पतन प्रभू ने देखा, चिंतन किए द्वादश अनुप्रेक्षा।।२५।।
सुर लौकान्तिक स्वर्ग से आए, प्रभू के मन वैराग्य जगाए।।२६।।
देव पालकी अपराजित लाए, उसमें प्रभु जी को पधराए।।२७।।
भूपति कई प्रभू को ले चाले, देवों ने की स्वयं हवाले।।२८।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, नील सु वन चंपक तरु पाया।।२९।।
मुनिव्रतों को तुमने पाया, प्रभु ने सार्थक नाम बनाया।।३०।।
पंचमुष्टि से केश उखाड़े, आकर देव सामने ठाड़े।।३१।।
केश क्षीर सागर ले चाले, भक्तिभाव से उसमें डाले।।३२।।
बेला के उपवास जो धारे, तीजे दिन राजगृही पधारे।।३३।।
वृषभसेन पड़गाहन कीन्हा, खीर का शुभ आहार जो दीन्हा।।३४।।
वैशाख कृष्ण नौमी दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।।३५।।
देव सभी दर्शन को आए, समवशरण सुंदर बनवाए।।३६।।
गणधर प्रभू अठारह पाए, उनमें प्रमुख सुप्रभ कहलाए।।३७।।
तीस हजार मुनी संग आए, समवशरण में शोभा पाए।।३८।।
इकलख श्रावक आए भाई, तीन लाख श्राविकाएँ आई।।३९।।
संख्यातक पशु वहाँ पे आए, असंख्यात सुर गण भी आये।।४०।।
प्रभु सम्मेद शिखर को आए, खड्गासन से ध्यान लगाए।।४१।।
पूर्व दिशा में दृष्टी पाए, निर्जर कूट से मोक्ष सिधाए।।४२।।
फाल्गुन वदी बारस दिन जानो, श्रवण नक्षत्र मोक्ष का मानो।।४३।।
प्रदोष काल में मोक्ष सिधाये, मुनि अनेक सह मुक्ती पाये।।४४।।
शनिअ रिष्टग्रहि जन्हेंस ताए,मुनिसुव्रतजीश शांति दलाएँ।।४५।।
इह पर भव के सुख हम पाएँ, मुक्तिवधु को हम पा जाएँ।।४६।।

दोहा - पाठ करें चालीस दिन, नित चालीसों बार।
मुनिसुव्रत के चरण में, खेय सुगंध अपार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, योग्य होय संतान।
दीन दरिद्री होय जो, 'विशद' होय धनवान।।

श्री मुनिसुव्रत विधान (संस्कृत)

माण्डला

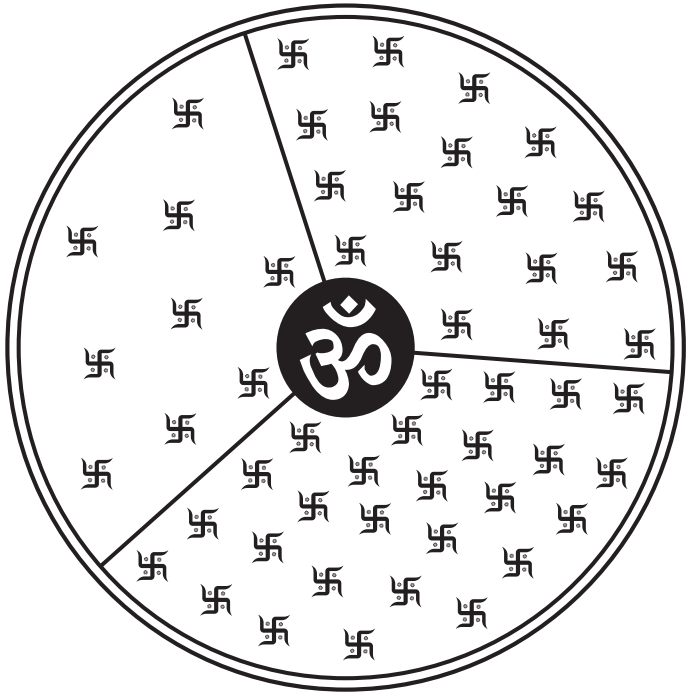

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

पुण्यार्जक :

राजेन्द्र सेठी, 74/130, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)

श्री मुनिसुव्रत स्तवन

(अनुष्टुप छन्द)

मुनिसुव्रत तीर्थेशं, राजगृही नृपः सुतं।
कच्छप लक्षणं युक्तं, त्रैलोक्येन् पूजितं जिनः।। 1।।
परमेष्ठी परं ज्योतिः, परमात्मा जगद्गुरुः।
ज्ञानमूर्ति-रमूर्तोऽपि, भूयान्नो भव-शान्तये।। 2।।
निर्विकल्पं निराबाधं, शाश्वतानन्द-मन्दिरम्।
तोष्टुवीमि चिदात्मानं, स्व-स्वरूपोप-लब्धये।। 3।।
यस्य ज्ञानान्तरिक्षैक-देशे सर्वं जगत्त्रयम्।
एक-मृक्षमिवाभाति, तस्मै ज्ञानात्मने नमः।। 4।।
अनंत - दर्शन - ज्ञान - वीर्यानन्दैक - मूर्तये।
सदा समयसाराय, नमोऽस्तु परमात्मने।। 5।।
स्व संवेदन-मव्यक्तं, यतत्त्वं सत्त्व शांतिदम्।
नमस्तस्मै विशुद्धाय, चिद्रूपाय परात्मने।। 6।।
अनन्तानन्त - संसार - पारावारैक - तारकम्।
परमात्मान-मव्यक्तं, ध्यायाम्यह-मनारतम्।। 7।।
अविद्यानादि-संभूता, यस्य स्मरण-मात्रतः।
क्षणाद् विलीयते तस्मै, नमोऽस्तु परात्मने।। 8।।
अनन्तं सर्वदा यस्य, सौख्यं वाचामगोचरम्।
नमस्तस्मै विशुद्धाय, चिद्रूपाय परात्मने।। 9।।
सती मुक्ति-सखी विद्या, यस्योन्मीलति सेवया।
नमस्तस्मै विशुद्धाय, चिद्रूपाय परात्मने।। 10।।
संसार सागरोतीर्ण, मोक्ष सौख्य पद प्रदम्।
नमामि 'विशदः' धर्मं, पुष्पांजलिं ततः क्षिपेत्।। 11।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री मुनिसुव्रत विधान (संस्कृत)

स्थापना

सुमित्रगोत्राधिप सत्कलत्र, पुत्रः पवित्रोदुरतच्छिदस्त्री।
नीलप्रभः सुव्रततीर्थनाथः, संप्रार्च्य तेऽस्मिन् शुभ कृत्प्रयोग।।
सुमित्र सोमावरगर्भ स्तूतिर्- हरीद्धवंशो मुनिसुव्रतेशः।
समर्च्यते राज-ग्रहाधिराजे, मयूर-कंण्ठच्छ विरुद्ध लक्ष्मा।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वंशस्थ छन्दम्)

सुगांगेय कुंभस्थ गंगाजलौघैः, सुभामोदयुक्तैर्गलदुर्मलौघैः।
जगद्देव देवंकृतेन्द्रादि सेवम्, यजेहं जिनेन्द्रं सुमुनिसुव्रतं तं।।1।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधा श्रिताहीद्र संदर्शितांगैर्,-लसच्चंदनैश्चारु चंद्रादि मित्रैः।
जगद्देव देवंकृतेन्द्रादि सेवम्, यजेहं जिनेन्द्रं सुमुनिसुव्रतं तं।।2।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुशालीय तंडूलपूज्यैः पवित्रैः, सतेजो जितेंदु प्रभाहार तारैः।
जगद्देव देवंकृतेन्द्रादि सेवम्, यजेहं जिनेन्द्रं सुमुनिसुव्रतं तं।।3।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अशोकाब्जकुंदादि कैस्युप्रसूनैर्,-भ्रमद भृंगगानाहित श्रव्यराषैः।
जगद्देव देवंकृतेन्द्रादि सेवम्, यजेहं जिनेन्द्रं सुमुनिसुव्रतं तं।।4।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पयस्सर्पिरिक्षुद्रवैः पायसान्नैः, सुगांगेय पात्रार्पितै सन्निवेद्यै।
जगद्देव देवंकृतेन्द्रादि सेवम्, यजेहं जिनेन्द्रं सुमुनिसुव्रतं तं।।5।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृतामर्त्यरत्नौर्जितध्वांत जातैः, प्रणाश प्रयत्नैः प्रकाश प्रदीपैः।
जगद्देव देवंकृतेन्द्रादि सेवम्, यजेहं जिनेन्द्रं सुमुनिसुव्रतं तं।।6।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकालागरुद्भूत धूपैवदभ्रैर्,-जनानांसुषूमाभिकृप्तप्रशंकैः।
जगद्देव देवंकृतेन्द्रादि सेवम्, यजेहं जिनेन्द्रं सुमुनिसुव्रतं तं।।7।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कपित्थाम्रजंबूल सन्मातुलुंगैः, प्रशस्तोरुरंभादि शुंभत्फलौघै।
जगद्देव देवंकृतेन्द्रादि सेवम्, यजेहं जिनेन्द्रं सुमुनिसुव्रतं तं।।8।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुशाद्यैः कुशौल्लासिसिद्धार्थ दूर्वैः, कनत्कांचन स्थाल-संस्थै सदर्घ्यै।
जगद्देव देवंकृतेन्द्रादि सेवम्, यजेहं जिनेन्द्रं सुमुनिसुव्रतं तं।। 9।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पंचकल्याणक के अर्घ्य

श्रावणेऽसित पक्षेस्यात्, द्वितिया तिथि रुत्तमा।
प्राणत स्वर्गेश्च्युत्वां, मातुगर्भे समागताः।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितियायां गर्भकल्याण प्राप्त शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम्यां कृष्ण वैसाखे, जन्म प्राप्त प्रजापतिः।
ब्रह्म सृष्टा विधाताभूद्, श्री मुनिसुव्रत जिनाः।।2।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण दशम्यां जन्मकल्याण प्राप्त शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम्यां ऽसित वैसाखे, स्वयंभूदीक्षितोऽभवन्।
ईक्ष्यते उल्का पतनं, सुव्रतसुव्रती भवेत्।। 3।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण दशम्यां तपकल्याण प्राप्त शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवम्यां कृष्ण वैसाखे, घातीघात चतुष्टयं।
विशद ज्ञान प्राप्ते च, लोकालोक प्रकाशकं।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण नवम्यां ज्ञानकल्याण प्राप्त शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णे द्वादश्यां, सम्मेदगिरि मस्तके।
निवृत्तिं परमां लब्ध्वां, सिद्धि कान्ता पतिर्वमौ।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याण प्राप्त शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सर्वराग विरक्तः सन्, सुव्रत धारकं जिनः।
संज्ञानादि गुणोपेतं, नमोस्तु मुनिसुव्रते।।

उपजाति

व्रतैः पवित्रीकृतवानसौ स्वं, संसार चक्रं नियमेन येन।
एनश्च नष्टं भुवि कर्मचक्रं, व्रतं स दद्यान्-मुनीसुव्रतोऽसौ।।1।।
दृक्पूर्वकं तद्व्रतमेव साक्षात्-, सर्वोत्तमं कारणकं शिवस्य।
श्रेयस्करं कर्महरं हि सद्यः, तदाह सत्यं मुनीसुव्रतोऽसौ।।2।।
अहिंसनं प्राणिभूता हि नित्यं, कायस्यवाचो मनसो विशुद्धा।
व्रतं पवित्रं गदितं च येन, नमाम्यहं तं मुनिसुव्रतं हि।।3।।
सत्वानुकम्पाव्रत मुत्तमं तद्, दयाद्रभावं करुणा परं च।
क्षमाकरं जीव गुणेषु नित्यंह्-युवाच देवो मुनीसुव्रतोऽसौ।।4।।
सर्वेषु जीवेषु ह्यनन्य भावात्-साम्यप्रदं, स्यात्समता व्रतं तत्।
दुर्भावहीनं करुणाकरं च, उवाच देवो मुनिसुव्रतोऽसौ।।5।।
प्रोक्तं व्रतं संयमकं-विशुद्धं, ब्रह्मव्रतं सौख्यकरं पवित्रम्।
नैर्ग्रन्थ रूपं च तपो व्रतं तत्, व्रतेशिना श्री मुनिसुव्रतेन।।6।।
रत्नत्रयं येन महाव्रतं तत्, अवादि कल्याणकरं पवित्रम्।
व्रतं क्षमाद्यं दशधोत्तमं हि, वंदे व्रतीशं मुनिसुव्रतं तम्।।7।।
महाव्रतं पंचाचार चारु, ह्याबारकं पंच दधे व्रतीशः।
पंचाक्ष जेता च मुनीश वन्द्यः, वन्दे जिनेशं मुनीसुव्रतेशम्।।8।।

विशदानन्द रूपोऽयं, त्रिजगत्परमेश्वर।
नमस्तस्मै विशुद्धाय, मुनिसुव्रत परात्मने।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म मल विनिर्मुक्तो, मुक्ति श्री रत मानसः।
अनंत सौख्य लाभाय, मुनिसुव्रत स्तौति मे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावलीं

श्री सुव्रत जिनेन्द्राय, विश्वशांति प्रदायकाः।
मम शांति प्रदातारि, कुर्यात् मे पुष्पांजलिं।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

विशद गुणावलीं

अथ नवलब्धिः

मिथ्यात्वं विनाशित्वाद्, सम्यक्त्व प्राप्त क्षायिकं।
अर्हत् पद परिप्राप्तं, श्री मुनिसुव्रतं जिनं।।1।।

ॐ ह्रीं क्षायक सम्यक्त्व लब्धी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षयात् सर्व कषायं च, प्राप्तं चारित क्षायकं।
अर्हत् पद परिप्राप्तं, श्री मुनिसुव्रतं जिनं।।2।।

ॐ ह्रीं क्षायक चारित लब्धी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्ञानावरण नाशित्वाद्, क्षायक ज्ञान लब्धये।
अर्हत् पद परिप्राप्तं, श्री मुनिसुव्रतं जिनं।।3।।

ॐ ह्रीं क्षायक ज्ञान लब्धी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षयं दर्शनावरणं, प्राप्यते दर्श क्षायकं।
अर्हत् पद परिप्राप्तं, श्री मुनिसुव्रतं जिनं।।4।।

ॐ ह्रीं क्षायक दर्शन लब्धी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षयं च दानांतरायं, क्षायक दान लभ्यते।
अर्हत् पद परिप्राप्तं, श्री मुनिसुव्रतं जिनं।।5।।

ॐ ह्रीं क्षायक दान लब्धी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षयं लाभांतरायं च, लाभं क्षायक संयुतं।
अर्हत् पद परिप्राप्तं, श्री मुनिसुव्रतं जिनं।।6।।

ॐ ह्रीं क्षायक लाभ लब्धी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भोगान्तराय क्षयं कृत्त्वा, क्षायकं च भोगं कुरु।
अर्हत् पद परिप्राप्तं, श्री मुनिसुव्रतं जिनं।।7।।

ॐ ह्रीं क्षायक भोग लब्धी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षायोपभोगान्तरायं, क्षायकोपभोगं कृतं।
अर्हत् पद परिप्राप्तं, श्री मुनिसुव्रतं जिनं।।8।।

ॐ ह्रीं क्षायक उपभोग लब्धी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षयं वीर्यान्तरायं च, वीर्यानंत प्राप्तं तथा।
अर्हत् पद परिप्राप्तं, श्री मुनिसुव्रतं जिनं।।9।।

ॐ ह्रीं क्षायक वीर्य लब्धी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्माष्टक विनिर्मुक्तम्, क्षायकलब्धि संयुतं।
अर्हत् पद परिप्राप्तं, श्री मुनिसुव्रतं जिनं।।10।।

ॐ ह्रीं क्षायक नव लब्धी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अथ अष्टादश दोष रहितं जिनः

'क्षुधा दोष' विनिर्मुक्तं, संसाराम्भोधि पारगं।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकान्त ध्यान संलीनं, 'तृषा दोष' निवारकं।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्व संताप' निर्मुक्तं, लोक शिखर वासिनम्।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।3।।

ॐ ह्रीं उष्ण दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय मयं शुद्धं, 'शीत दोष' विवर्जितम्।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।4।।

ॐ ह्रीं शीत दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विस्मय दोष' संत्यक्त, पाप शत्रु प्रहाणवे।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।5।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श ज्ञानाचरण युक्तं, 'अरति दोष' प्रशान्तकं।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।6।।

ॐ ह्रीं अरति दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरितं ऐन चारित्रं, 'खेद दोष' विनाशकं।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।7।।

ॐ ह्रीं खेद दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'राग दोष' संत्यक्तस्, तं विभुं नित्य-मर्चये।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।8।।

ॐ ह्रीं राग दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मुक्तं 'सर्व शोकं' च, सर्व कर्म विनाशकं।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।9।।

ॐ ह्रीं शोक दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जात्यादि मद' संत्यक्तं, गुणाष्टक विभूषितं।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।10।।

ॐ ह्रीं मद दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्व मोह' रहितं च, सम्यक्त्व गुण भूषितं।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।11।।

ॐ ह्रीं मोह दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सप्त भयं' विनिर्मुक्तं, सप्त तत्त्व प्रकाशकं।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।12।।

ॐ ह्रीं भय दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच भेद युतं 'निद्रा', तास दोष निवारणं।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।13।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चिंता दोष' रहितो ऽर्हन्, संयमा प्रतिमालया।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।14।।

ॐ ह्रीं चिंता दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'खेद दोष' विनासित्वाद्, षट्काय रक्षकोद्धतं।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।15।।

ॐ ह्रीं खेद दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्व राग' रहितेन, तं ध्यायन्ति निरन्तरं।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।16।।

ॐ ह्रीं राग दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तं देव प्रत्यहं वन्दे, 'सर्व द्वेष' रहितं स यः।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।।17।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मृत्यु दोष' रहितं देवं, ''विशद'' ज्ञान प्रभावकं।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।। 18।।

ॐ ह्रीं मृत्यु दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दोषाऽष्टादश रहितं', केवल ज्ञान-धारकाः।
सर्व कामप्रदं नित्यं, पूजयामि जिनेश्वरं।। 19।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशेष गुणावली

दश अतिशय प्राप्ते, जन्म काले जिनेन्द्र सः।
शतेन्द्र पूजिताः पादं, त्रियोगेन स भक्तिताः।।1।।

ॐ ह्रीं जन्मातिशय प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान प्राप्ते स, जाग्रते दशातिशयाः।
शतेन्द्र पूजिताः पादं, त्रियोगेन स भक्तिताः।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुरुते देवातिशये, भक्ति भावेन् चतुर्दश।
शतेन्द्र पूजिताः पादं, त्रियोगेन स भक्तिताः।।3।।

ॐ ह्रीं देवातिशय प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य चाष्टौ प्राप्ते, विशद ज्ञान धारकाः।
शतेन्द्र पूजिताः पादं, त्रियोगेन स भक्तिताः।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त ज्ञान दृग्वीर्य, सौख्यानन्त धराः जिनः।
शतेन्द्र पूजिताः पादं, त्रियोगेन स भक्तिताः।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टय प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्म

ऐन-केनाऽपि दुष्टेन, पीडितेनऽपि कुत्रचित्।
क्षमा त्याज्यान भव्येन, स्वर्ग मोक्षाभिलाषिणा।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्म प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृदुत्त्वं सर्व भूदेषु, कार्यं जीवेन सर्वदा।
काठिन्यं त्यज्यते नित्यं, धर्म बुद्धि विजानता।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्यत्त्व क्रियते सम्यक्, दुष्ट बुद्धिश्च त्यज्यते।
पाप चिंता ना कर्तव्या, श्रावकै-धर्म चिन्तकैः।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यन्तरश्चापि, मनो वाक्काय शुद्धिभिः।
सुचित्तेण सदा भव्यं, पाप भीतैः सु श्रावकै।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असत्यं सर्वथा त्याज्यं, दुष्ट वाक्यं च सर्वथा।
पर निंदा ना कर्त्तव्या, भव्येनापि च सर्वदा।।10।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयमं द्विविधं लोके, कथितं मुनि पुंगवैः।
पालनीयं पुनश्चित्ते, भव्य जीवेन सर्वदा।।11।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्तपः द्विविधं लोके, बाह्याभ्यंतर भेदतः।
स्वयं शक्ति प्रमाणेन, क्रियते धर्म वेदिभिः।।12।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्विधाय संघाय, दानं चैव चतुर्विधं।
दातव्या सर्वदा सद्भिः, चिन्तकैः पारलौकिकैः।।13।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्विंशति संख्यातो, यो परिग्रह ईरितः।
तस्य संख्या प्रकर्तव्या, तृष्णा रहित चेतसः।।14।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्म प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवधा सर्वदा पाल्यं, शीलं संतोष धारिभिः।
भेदाभेदेन संयुक्तं, सद् गुरुणां प्रसादतः।।15।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ द्वादश तपः

एक द्वि त्रि चतुः पंच, षट् सप्ताष्ट-नवादयः।
उपवासाः जिनैस्तत्र, षण्मासावधयो मताः।। 1।।

ॐ ह्रीं अनशन तप धारकाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तस्मादेकोत्तर श्रेण्या, कवलः शिष्यते परः।
मुच्यते यत्रेव तदिद-मवमौदर्य मुच्यते।।2।।

ॐ ह्रीं अवमौदर्य तप धारकाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुड़-तैल दधि क्षीर, सर्पिषां वर्जने सति।
देशतः सर्वतः ज्ञेयं, तपः साधो रसोज्झनम्।।3।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप धारकाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लूना तृष्णालतारूढ़ा, चित्त संकल्प पल्लवाः।
कुर्वता वृत्तिसंख्यान, परेषां दुश्चिरं तपः।।4।।

ॐ ह्रीं वृत्तिपरिसंख्यानं तप धारकाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्फिगं समस्फिक्कं, कृत्यं कुक्कुटकासनम्।
बुद्वेत्यासनं साधोः, कायक्लेश विधायिनः।।5।।

ॐ ह्रीं काय क्लेश तप धारकाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शून्यवेश्म शिलावेश्म, तरु मूल गुहादयः।
विविक्ता भाषिताः शैय्या, स्वाध्याय ध्यानवर्धिका।।6।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैयासन तप धारकाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनो वचन कायैश्च, बभूवो दुष्कृतं विभो!।
तव प्रसादतो मिथ्या, भवन्ति दुष्कृतं मम्।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप धारकाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यत्युचाशन पीठिं च, निवसन्ति तलाशने।
स्याद् विनय तपश्चित्ते, भणन्ति जिन शासने।।8।।

ॐ ह्रीं विनय तप धारकाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश विधाऽनगाराणां, दानं मानादरै भक्त्या।
हस्त पादादि संवाहन्, वैय्यावृत्ति भवन्ति च।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप धारकाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाचना पृच्छनाम्नाय, धर्मोपदेशऽनुप्रेक्षां।
स्वाध्यायेनास्ति सुध्यानं, ध्यान फल निर्वाणकं।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप धारकाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ममत्वं परिवर्ज्यामि, निर्ममत्वे व्यवस्थामि।
आलम्बनं वर्ज्मात्मनः, अवशेषानि वोसरे।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारकाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तं सर्व विकल्पानि, तत्त्व सुचिन्तनेऽशक्तः।
आत्म ध्यान रतो नित्यं, ध्यान तपो जिनागमे।।12।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप धारकाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद गुण संयुक्तं, धर्मेणेवक्षमादिकम्।
अनशनादि तपः द्वादश, धारकाः जिन पुंगवा।।13।।

ॐ ह्रीं धर्म अतिशय प्रातिहार्य अनन्त चतुष्टय द्वादशतप धारकाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य :- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

महाव्रतधरो धीरः, सुव्रतो मुनिसुव्रतः।
नमस्तुभ्यं तनुतान्ये, रत्नत्रयस्य पूर्णताम्।।

जय सकलामरखचराधिपवंद्यं, वरचरणं जनतात-मवंद्यं।
जय गुण निधि भवसागर गतपारं, नौमिजिनं त्रिभुवन सुखसारं।।1।।
जय विदितसुलोकालोकप्रकारं, जय गणधर महितसुपाद पयोजं।
जय संश्रितसमवसृति श्रीविहारं, नौमिजिनं त्रिभुवन सुखसारं।।2।।
जय शोकमिदं सदशोकसुयुक्तं, जय छत्रत्रय वंदितपरिमुक्तम्।
जय कृतसुरसुमनोवृष्टिमुदारं, नौमिजिनं त्रिभुवन सुखसारं।।3।।
जय मिथ्यामत पर्वतपविदंडं, जय प्रबलांजवंजव जलधितरंडं।
जय विगतमलं कर्मारिविदूरं, नौमिजिनं त्रिभुवन सुखसारं।।4।।
जय कवितितिनुतनतिचरणसरोजं, जय फणिपतिकिन्नरनिर्मितसेवं।
जय प्रकटित तत्त्वातत्त्वविचारं, नौमिजिनं त्रिभुवन सुखसारं।।5।।
जय सकलसुविद्यारारिधिचंद्रं, जय पादपयोरुह नत दिविजेंद्रं।
जय वर्जित भूषंविगतावहारं, नौमिजिनं त्रिभुवन सुखसारं।।6।।
जय शुभदं मंदरगिरिवरधीरं, जय निर्मलवारिधि सम गंभीरं।
जय कमनीयं वरकरुणागारं, नौमिजिनं त्रिभुवन सुखसारं।।7।।
जय शंकरसेवित विगतविरामं, जय परमानंदविजग-दभिरामं।
जय मुक्तिरमा कंदलगलहारं, नौमिजिनं त्रिभुवन सुखसारं।।8।।

(इन्द्रवज्रा छन्द)

महाव्रतं मुक्तिपथं दधानः, प्राप्तः प्रमुक्तिं मुनिसुव्रतस्त्वं।
बोधिः समाधिः परिणाम शुद्धिः, भूयात् सदा मे हि नमोऽस्तु तुभ्यं।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारकाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनुष्टुप छन्द)

अष्टकर्म विनिर्मुक्तं, 'विशद' ज्ञान धारकाः।
जिनः श्रीमुनिसुव्रत, त्रियोगेन् परिपूजिताः।।

इत्याशीर्वादः

श्री मुनिसुव्रत स्तोत्र

छायासुतः सूर्य खचारि पुत्रोः, यः कृष्ण वर्णो रजनीश शत्रुः।
अष्टारिगा सज्जन सौख्यकारी, शनिश्चर ग्रह निवारयामि।।1।।

नमः श्री तीर्थनाथाय, त्रैलोक्याधिपतेर्-गुरुः।
पापं च हरते नित्यं, मुनिसुव्रत दर्शनम्ः।।2।।

ॐ एम् क्लीं श्रीं वरुण बहुरूपिणी (यक्ष-यक्षी) सहिताय अतुलबल पराक्रमाय एम् ह्रीं क्लीं क्ष्म्ल्र्व्यूं नमः।

दर्शनं हरते रोगं, दर्शनं हरते दुखं।
दर्शनं हरते सोकं, पापं हरति च दर्शनात्।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सर्वविघ्न निवारणं क्ष्म्ल्र्व्यूं नमः।

दर्शनाल्लभते भाग्यं, दर्शनाल्लभते धनं।
दर्शनाल्लभते पुण्यं, सुखी भवति दर्शनात्।।4।।

ऐं ॐ अः नमः नव बारं जाप्यं दीयते।

मुनिसुव्रत सिंहस्य, श्याम वर्णस्य संस्तवान्।
लभन्ते श्रेयसां सिद्धिं, प्रकुर्वन् वांछितैः सह।।5।।
जिनागारे गता कृत्त्वा, ग्रहाणां शांति हेतवे।
नमस्कारं ततो भक्त्या, जपे-दष्टोन्तर शतम्।।6।।
महाव्रत धरोधीरः, सुव्रतो मुनिसुव्रतः।
निवारका ग्रहारिष्ट, शनि छायासुतं वरं।।7।।
पठेन्नित्यं इदं स्तोत्रं, त्रियोगं च विशेषतः।
गृहेभवति कल्याणं, 'विशद' तीर्थ स्तवेन् च।।8।।

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं सर्व व्याधि विनाशन समर्थाय श्री मुनिसुव्रताय नमः।

महामृत्युंजय चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
मृत्युञ्जय हम पूजते, चरणों में धर शीश।।

चौपाई

कर्म घातिया चार नशाए, अतः आप अर्हत् कहलाए।।१।।
अनन्त चतुष्टय जो प्रगटाए, दर्शन ज्ञान-वीर्य सुख पाए।।२।।
दोष अठारह पूर्ण नशाए, छियालिस गुणधारी कहलाए।।३।।
चौंतिस अतिशय जिनने पाए, प्रातिहार्य आठों प्रगटाए।।४।।
समवशरण शुभ देव रचाए, खुश हो जय-जयकार लगाए।।५।।
समवशरण की शोभा न्यारी, उससे भी रहते अविकारी।।६।।
देव शरण में प्रभु के आते, चरण-कमल तल कमल रचाते।।७।।
सौ योजन सुभिक्षता होवे, सब प्रकार की आपद खोवे।।८।।
भक्त शरण में जो भी आते, चतुर्दिशा से दर्शन पाते।।९।।
गगन गमन प्रभु जी शुभ पाते, प्राणी मैत्री भाव जगाते।।१०।।
प्रभो! ज्ञान के ईश कहाए, अनिमिष दृग प्रभु के बतलाए।।११।।
दिव्य देशना प्रभु सुनाते, सुर-नर-पशु सुनकर हर्षाते।।१२।।
मृत्युञ्जय जिन प्रभू कहाते, जीत मृत्यु को शिव पद पाते।।१३।।
ज्ञान अनन्त दर्श सुख पाते, वीर्य अनन्त प्रभू प्रगटाते।।१४।।
सिद्ध सनातन आप कहाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।।१५।।
अनुपम शिवसुख पाने वाले, ज्ञान शरीरी रहे निराले।।१६।।
नित्य निरंजन जो अविनाशी, गुण अनन्त की हैं प्रभु राशि।।१७।।
तुमने उत्तम संयम पाया, जिसका फल यह अनुपम गाया।।१८।।
रत्नत्रय पा ध्यान लगाया, तप से निज को स्वयं तपाया।।१९।।
कई ऋद्धियाँ तुमने पाईं, किन्तू वह तुमको न भाईं।।२०।।
उनसे भी अपना मुख मोड़ा, मुक्ति वधू से नाता जोड़ा।।२१।।
सहस्र आठ लक्षण के धारी, आप बने प्रभु मंगलकारी।।२२।।
सहस्र आठ शुभ नाम उपाए, सार्थक सारे नाम बताए।।२३।।
नाम सभी शुभ मंत्र कहाए, जो भी इन मंत्रों को ध्याए।।२४।।
सुख-शांती सौभाग्य जगाए, अपने सारे कर्म नशाए।।२५।।
विषय भोग में नहीं रमाए, रत्नत्रय पा संयम पाए।।२६।।
तीन योग से ध्यान लगाए, निज स्वरूप में वह रम जाए।।२७।।
संवर करे निर्जरा पावे, अनुक्रम से वह कर्म नशावे।।२८।।

बीजाक्षर भी पूजें ध्यावें, जिनपद में नित प्रीति बढ़ावें॥२९॥
कभी मंत्र जपने लग जाए, कभी प्रभु को हृदय बसाए॥३०॥
स्वर व्यंजन आदी भी ध्याए, अतिशय कर्म निर्जरा पाए॥३१॥
पुण्य प्राप्त करता शुभकारी, शिवपथ का कारण मनहारी॥३२॥
इस भव का सब वैभव पाते, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाते॥३३॥
वह बनते त्रिभुवन के स्वामी, हम भी बने प्रभु अनुगामी॥३४॥
यही भावना रही हमारी, कृपा करो हम पर त्रिपुरारी॥३५॥
मृत्युञ्जय हम भी हो जाएँ, इस जग में अब नहीं भ्रमाएँ॥३६॥
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का नाथ! सहारा॥३७॥
शिव पद जब तक ना पा जाएँ, तब तक तुमको हृदय सजाएँ॥३८॥
नित-प्रति हम तुमरे गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ॥३९॥
अपना हम सौभाग्य जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपुर जाएँ॥४०॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ॥
सुत सम्पत्ति सुगुण पा, होवे इन्द्र समान।
मृत्युञ्जय होके 'विशद', पावे पद निर्वाण॥

श्री नवग्रह शांति चालीसा

दोहा- नव देवों के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
अर्चा करते भाव से, पाने भवदधि पार॥
चालीसा नवग्रह यहाँ, पढ़ते योग सम्हार।
सुख-शांति सौभाग्य पा, करें आत्म उद्धार॥

चौपाई

नवग्रह नभ में रहने वाले, सारे जग से रहे निराले॥१॥
रवि शशि मंगल बुध गुरु गाये, शुक्र शनि राहु केतु बताए॥२॥
कर्म असाता उदय में आए, तब ये नवग्रह खूब सताए॥३॥
कभी व्याधि लेकर के आते, कभी उदर पीड़ा पहुँचाते॥४॥
आँख कान में दर्द बढ़ाते, मन में बहु बैचेनी लाते॥५॥
कभी होय व्यापार में हानी, कभी करें नौकर मनमानी॥६॥
कभी चोर चोरी को आवें, छापा मार कभी आ जावें॥७॥
कभी कलह घर में बढ़ जावे, कभी देह में रोग सतावे॥८॥
बेटा-बेटी कही न माने, अपने अपना न पहिचाने॥९॥
प्राणी संकट में पड़ जावे, शांती की ना राह दिखावे॥१०॥

ऐसे में भी प्रभु की भक्ति, हर कष्टों से देवे मुक्ति॥११॥
ग्रहारिष्ट रवि जिसे सताए, पद्म प्रभु को वह नर ध्याये॥१२॥
जिन्हें चन्द्र ग्रह अधिक सताए, चन्द्र प्रभु को भाव से ध्याये॥१३॥
मंगल ग्रह भी जिन्हें सताए, वासुपूज्य जिन शांति दिलाए॥१४॥
ग्रहारिष्ट बुध पीड़ा हारी, अष्ट जिनेन्द्र रहे शुभकारी॥१५॥
विमलानन्त धर्म अर पाए, शांति कुन्थ नमि वीर कहाए॥१६॥
गुरु अरिष्ट ग्रह शांति प्रदायी, अष्ट जिनेन्द्र रहे सुखदायी॥१७॥
ऋषभाजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति सुपार्श्व विमल पद वंदन॥१८॥
तीर्थंकर शीतल जिन स्वामी, गुरु ग्रह शांती कारक नामी॥१९॥
शुक्र अरिष्ट शांति कर गाए, पुष्पदन्त जिनराज कहाए॥२०॥
शनि अरिष्ट ग्रह शांती दाता, श्री मुनिसुव्रत रहे विधाता॥२१॥
राहू ग्रह नाशक कहलाए, नेमिनाथ तीर्थंकर गाए॥२२॥
मल्लि पार्श्व का ध्यान जो करते, केतू ग्रह की बाधा हरते॥२३॥
जो चौबिस तीर्थंकर ध्याए, जीवन में वह शांति उपाए॥२४॥
गगन गमन वह करते भाई, मानव को होते दुखदायी॥२५॥
जन्म लग्न राशि को पाए, मानव को ग्रह बड़ा बताए॥२६॥
ज्ञानी जन उस ग्रह के स्वामी, तीर्थंकर को भजते नामी॥२७॥
ग्रह हारी दिन जिन को ध्याएँ, पूजा कर सौभाग्य जगाएँ॥२८॥
करें आरती मंगलकारी, विशद भाव से शुभ मनहारी॥२९॥
चालीसा चालिस दिन गाएँ, मंत्र जाप भी करते जाएँ॥३०॥
मंगलमयी विधान रचाएँ, शांति भाव से ध्यान लगाएँ॥३१॥
अन्तिम श्रुत केवली गाए, भद्रबाहु स्वामी कहलाए॥३२॥
नवग्रह शांति स्तोत्र रचाएँ, चौबीसों जिनवर को ध्याएँ॥३३॥
शान्त्यर्थ शुभ शांतीधारा, भवि जीवों को बने सहारा॥३४॥
नौ तीर्थंकर नवग्रह हारी, कहलाए हैं मंगलकारी॥३५॥
चन्द्रप्रभु वासुपूज्य बताए, मल्लि वीर सुविधि जिन गाए॥३६॥
शीतल मुनिसुव्रत जिन स्वामी, नेमि पार्श्व जिन अन्तर्यामी॥३७॥
नवग्रह शांती जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥३८॥
'विशद' भावना हम ये भाएँ, सुख-शांती सौभाग्य जगाएँ॥३९॥
हमें सहारा दो हे स्वामी!, बने मोक्ष के हम अनुगामी॥४०॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति से लोग।
रोग-शोक क्लेशादि का, रहे कभी न योग॥
नवग्रह शांती के लिए, ध्याते जिन चौबीस।
सुख-शांती आनन्द हो, 'विशद' झुकाते शीश॥